अथाष्टादशोऽध्यायः

ठाह्रमाँ मोक्ससन्न्यासयोग अद्ध्याय

अर्जुन उवाच

सन्न्यासस्य महाबाहो, तत्त्वमिच्छामि वेदितुम्।
त्यागस्य च हृषीकेश, पृथक्केशिनिषूदन।। १

अर्जन बोल्ल्या

(प्रसन करे दो अर्जन नै)

[1]'सन्न्यास' का हे महाबाहू, तन्त चाहूँ जाणना मैँ सूँ।
[2]'त्याग' का बी इन्द्रियाँ के हे, पालक, न्यारा, केसि असुर नै ।
मारण आळे क्रिस्ण, बता तैँ॥ १

श्रीभगवानुवाच

काम्यानां कर्मणां न्यासं, सन्न्यासं कवयो विदुः।
सर्वकर्मफलत्यागं, प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः।। २

स्रीभगुवान बोल्ले

(उन का उत्तर दिया किसन नै)

[1]चाह फळाँ नै करदे जो उन, कर्माँ का 'सम्' आच्छी तह्रियाँ।
बान्धैँ नाँ जो माणस नै वो, इस तह्रियाँ तैँ कर कैँ धरणा।।
'न्यास' 'सम्' अर मिळैँ ये बणदा, 'सन्न्यास' इसा ग्यान्नी जाणैँ।
[2]'मैँ सूँ नाँ ए, इन का कर्ता, इन्द्री मन बुद्धी सैँ करदे'।।
सोच समझ न्यूँ करम त्यागणा, कर कैँ बी यो सै नाँ ए करणा।
सब तह्रियाँ के कर्माँ का फळ, छोड, हटा कैँ उन तैँ ममता।।
उन का करणा 'त्याग' बोलदे, खास तह्राँ तैँ छाँट-छाँट कै ।
दुनियाँ नै ये देक्खण आळे, कर्म'र फळ मैँ किस पै इन का।
चाह्लै बस सै, या वो समझैँ।। २

त्याज्यं दोषवदित्येके, कर्म प्राहुर्मनीषिणः।
यज्ञदानतपःकर्म, न त्याज्यमिति चापरे।। ३

(करम छोडणै पै दो मत)

[1]छोड्डु माणस खोट, कमी तैँ, भरी चीज नै, रीत जगत् की।
इस के कारण दोस भर्‌या जो, कर्म त्यागणा वो चहिये।।
कोए कहँदे ग्यान्नी ये सैँ, [2]'यग दान'र तप नहीँ छोडणे।
चहियैँ करणे माणस नै ये', या सैँ कहँदे दूज्जे ग्यान्नी।। ३

निश्चयं शृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम।
त्यागो हि पुरुषव्याघ्र, त्रिविधः संप्रकीर्तितः।। ४

(किरसण का निर्णै)

निर्णै सुण तैँ मेरा अर्जन, इस 'त्याग' सबद कै बारै मैँ।
भरत बंस के लोग्गाँ मैँ हे, सब तैँ आच्छे बाघ जिसे नर।
क्यूँकी तजणा, त्याग, छोडणा, तीन तह्राँ का खोल बताया॥ ४

यज्ञदानतपःकर्म, न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव, पावनानि मनीषिणाम्।। ५

(तीन करम सै नहीँ छोडणे)

यग, दान, तपस्या, करम तीन ये, कोए बी नाँ छोड्डुण जोग्गा।
करणा ए वो चहिये सब नै, यग दान तपस्या ए हाँ सैँ।।
सुद्ध पवित्तर, निर्मल करणे, मन नै कर कैँ बस मैँ इस नै।
आप्णी राह चलावणियाँ के ॥ ५

एतान्यपि तु कर्माणि, सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च।
कर्तव्यानीति मे पार्थ, निश्चितं मतमुत्तमम्।। ६

(किस तह्रियाँ येँ करम करै माणस)

येँ बी, किन्तू, करम तीन सैँ, [1]'कर्ता सूँ', या आसक्ती।
'फळ बी मन्नै नाँ चहिये', इसी समझ तैँ छोड फळाँ नै।।

करणे चहियेँ माणस नै ये, यो मेरा पिरथासुत अर्जन।
पक्का मत सै निस्चित मान्या, सब तैँ आच्छा मान्नूँ मैँ यो॥ ६

नियतस्य तु संन्यासः, कर्मणो नोपपद्यते।
'नियत' बताया नित्त नियम तैँ, सास्त्रविधी तैँ करणा जिस का।
इसै करम का त्याग सही नाँ।।
मोहात् तस्य परित्यागस्, तामसः परिकीर्तितः।। ७

(तीन तह्राँ के त्याग)

अग्ग्यान कारणै भरमित का, उसै छोडणा तमोगुणी सै।। ७

दुःखमित्येव यत् कर्म, कायक्लेशभयात् त्यजेत्।
स कृत्वा राजसं त्यागं, नैव त्यागफलं लभेत्।। ८

'पचड़्याँ मैँ क्यूँ पड़णा?, इस मैँ, क्लेस भोत-से करणे होँगे।
बैठ चैन तैँ, काया नै क्यूँ, तोडै सैँ तैँ यो सब कर कैँ?'।।
न्यूँ सोच करम तैँ भाज्ज्या डर कैँ, माणस वो कर त्याग राजसी।
नाँ ए करमत्याग का फळ ले॥ ८

कार्यमित्येव यत्कर्म, नियतं क्रियतेऽर्जुन।
सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव, स त्यागः सात्त्विको मतः।। ९

'करणा ए सै', न्यूँ सोच समझ, करम नियम तैँ, सास्त्रविधी तैँ।
नित्य बताया आसक्ती तज, फळ बी तज कैँ करैँ, त्याग यो।
सतोगुणी सै मान्या अर्जन॥ ९

न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म, कुशले नानुषज्जते।
त्यागी सत्त्वसमाविष्टो, मेधावी छिन्नसंशयः।। १०

(त्याग्गी के लच्छण)

'कुसा तोड़दैँ हाथ कटै नाँ', न्यूँ जो तोड़ै 'कुसल' कुहावै।
होम करण मैँ हाथ जळै नाँ, इसा करणियाँ 'कुसल' कुहावै।।
ज्यूँ करणै तैँ हानी नाँ हो, न्यूँ करणै नै कहैँ 'कुसलता'।

आसक्ती अर फळ की इच्छा, कर कैँ करम करे, वैँ देवैँ।।
जनम-मरण के बन्धन, इन कै, मध मैँ, होन्दे बचपन जोबन।
अङ्ग-अङ्ग नै जीरण-सीरण, करदै दुस्ट बुढापै कै।।
सुख-दुख मैँ वैँ गेरैँ, बान्धैँ, 'अकुसल' इस तैँ हो सैँ सारे।
द्वेस करै नाँ उन तैँ अर जो, 'कुसल' करम मैँ, आसक्ती अर।।
फळ की इच्छा छोड करम जो, करदा किन्तू उत नाँ रमदा।
वो सै त्यागी सतगुण बैठ्ठ्या, सत्त्व समाया उस कै कण-कण।।
'मेधा' बुद्धी, मती मनन तैँ, स्थापित करदी, धारण करदी।
तन्त बस्तु का समझा कर कैँ, उस नै पा वो सही प्रसंसित।
छिन-भिन होए संसै आळा॥ १०

न हि देहभृता शक्यं, त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः।
यस्तु कर्मफलत्यागी, स त्यागीत्यभिधीयते।। ११

नाँ कायाधारी कोए जो, तन नै पुस्ट करण मैँ लाग्ग्या।
सकै छोड सै कर्माँ नै वो, पूरी तह्रियाँ करण सोच तैँ।।
जो सै, किन्तू, कर्माँ का फळ, त्याग्गै उन नै नाँ ए चाह्वै।
करदा आप्णे करम सबी जो, वो सै 'त्याग्गी' बोल्ह्या जावै॥ ११

अनिष्टमिष्टं मिश्रं च, त्रिविधं कर्मणः फलम्।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य, न तु संन्यासिनां क्वचित्।।१२

(कर्माँ के फळ तीन तह्राँ के)

ना भाँदा, चाह्या, मिल्या-जुल्या, तीन तह्राँ का कर्माँ का फळ।
होवै फळ नाँ त्याग्गणियाँ का, मरणै पाच्छै नाँ पर होवै।
त्याग करणियाँ का कित्तै॥ १२

पञ्चैतानि महाबाहो, कारणानि निबोध मे।
सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि, सिद्धये सर्वकर्मणाम्।। १३

(पाँच्चाँ तैँ सब करम बणैँ सैँ)

पाँच ये तैँ रै महाबाहू, कारण जाण मेरै तैँ न्यूँ।
सही तह्माँ तैँ, गिण-गिण कैँ जो, ततव बतावै खोल जगत् के।।
'सम्यक्' आच्छी तह्मियाँ 'ख्याती' दर्सन जग का, 'साङ्ख्य' बताया।
'साङ्ख्य' नाम सै वो यो सास्तर, परम ततव नै समझण खात्तर।।

गिणती सारी छोड पिछाड़ी, एक ततव पै जा कैँ पौँह्च्या।
सारे बेद्दाँ ग्यान्नाँ का अर, 'अन्त' बताया 'तोड़' जगत् का।।
कर्यै करम कै बन्धन फळ का, अन्त बतावै सही तह्माँ तै।
'ख्यान' बखाण करै यो सास्तर, उस मैँ बोल्ले सिद्ध करण नै।।
सारे करम करे जो ज्याँवैँ, जिन का त्याग सही नाँ होन्दा।
उन की सिद्धी की खात्तर, पाँच बताए कारण आग्गै॥ १३

अधिष्ठानं तथा कर्ता, करणं च पृथग्विधम्।
विविधाश्च पृथक् चेष्टा, दैवं चैवात्र पञ्चमम्।। १४

[१]इच्छा, गुस्सा, लोभ, द्वेस अर, इन तैँ होणाळी चेस्टा अर।
सुख-दुख की या आस्रै काया, जित ह्वै प्रगटैँ सारे गुण सैँ।।
[२]बुद्धि उपाधी मैँ आभासित, चित् सै मान्नै खुद नै कर्ता।
काया मैँ रह इन नै भोग्गै, [३]भार-भीतरी साधन इन्द्री।।
करम ग्यान के बिसयाँ का ये, भोग करावैँ बण कैँ साधन।
[४]इन के हौँ सैँ भाँत-भाँत के, न्यारे-न्यारे खूब कमन्तर।।
[५]देव जाणदा किस का कित कद, प्रारब्ध भोग हो वो क्यूक्कर।
[१]आस्रै काया, [२]कर्ता, भोक्ता, जीवात्मा के [३]साधन इन्द्रिय।।
पाँच करम की, पाँच ग्यान की, दोन्नूँ सँग सै, लाग्गै मनसा।
बुद्धि बाह्वीँ इन की राणी, [४]तह्माँ-तह्माँ की हरकत सब की।
[५]प्रारब्ध चुकावै देव पाँचमाँ, इन कै कारण करम सिद्ध हौँ॥ १४

शरीरवाङ्मनोभिर्यत्, कर्म प्रारभते नरः।
न्याय्यं वा विपरीतं वा, पञ्चैते तस्य हेतवः।। १५

काया, वाणी मन कै द्वारा, जो कर्म सरु करदा माणस।

करम सही हो, नहीँ सही या, पाँच्चूँ ये सैँ उस के कारण॥ १५

तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः।
पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्, न स पश्यति दुर्मतिः।। १६

(समझ न आत्मा नै ए कर्ता)

इन सब मैँ ए इसी स्थिती मैँ, कर्ता खुद नै सिरफ समझदा।
नाँ या समझ सही सै उस की, इस कै कारण नाँ वो समझै।
खोट्टी दूसित बुद्धी आळा॥ १६

यस्य नाहंकृतो भावो, बुद्धिर्यस्य न लिप्यते।
हत्वापि स इमांल्लोकान्, न हन्ति न निबध्यते।। १७

(कोण न कर्ता करम कर्यैँ बी)

जिस कै नाँ हङ्कार भाव सै, 'मैँ सूँ कर्ता, मैँ सूँ ग्याता'।
न्यूँ सै माणस जो नाँ समझै, 'बुद्धि' करण जो सूक्ष्म भीतरी।।
उपाधि-रूप जो आत्मा की सै, नाँ वो ल्हिसदी कर्तापण मैँ।
मार गिरा बी इस दुनियाँ नै, नाँ मारै अर नाँ ए बँधदी॥ १७

ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता, त्रिविधा कर्मचोदना।
करणं कर्म कर्तेति, त्रिविधः कर्मसंग्रहः।। १८

(करम करण मैँ तीन जरूरी)

[१]ग्यान, [२]बिसै जो जाण्या जावै, [३]ग्यान क्रिया का कर्ता ग्याता।
चित् चेतन आत्मा प्रतिबिम्बित, अचिद्, अचेतन बुद्धी मैँ वो।।
इन मैँ गाँठ पड़ी या इसबिध, बुद्धी खुद नै चेतन समझै।
भासित, कल्पित, आरोपित यो, ग्याता कर्ता, भोक्ता हो सै।।
तीन तह्माँ की क्रियाविधी, तीन्नूँ कट्ठी सब कर्माँ मैँ।
करैँ प्रवर्तित, इन नै समझो, करण, करम अर कर्ता ये सैँ।।
तीन क्रिया का आस्रै होवैँ, इन मैँ स्थित सै किरिया होन्दी।
सङ्छेप क्रिया का तीन तह्माँ तैँ, ग्यानी जन नै सही बताया।।

बाक्की कारक इन मैँ सिमटे, बिसै स्थान कै भेद कारणै।
'कर्म' क्रिया का बिसै दूर हो, ईप्सित मात्तर होवै जिद वो।।
कहैँ सम्प्रदान तद करम नै, सर्वसधारण आस्रै दो सैँ।
देस, काल, जिद इन मैँ कर्ता, संयोग वियोगाँ की स्थिति मैँ।।
करम बणै आधार क्रिया का, अपादान बी होवै तद सै।
करम करण का आस्रै कर्ता, फळ जो हो सै इस कै खात्तर।।
करणै मैँ आजाद करण नाँ, करण नहीँ खुद करम करै सै।
कर्ता तैँ वो प्रेरित साधन, कर्ता ए न्यूँ आस्रै सब का।
आजादी तैँ आस्रै सब का, आस्रै सब का, सब का, सब का॥ १८

ज्ञानं कर्म च कर्ता च, त्रिधैव गुणभेदतः।
प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि।। १९

(ग्यान, करम ओर कर्ता तीन तह्नाँ के)

'ग्यान' जाणना, 'करम', बिसै अर, 'कर्ता' करणाळा, तीन तह्नाँ के।
तीन गुणाँ कै भेद कारणै, बोल्लैँ जो सैँ गिणैँ गुणाँ नै।।
उस तैँ होन्दी स्रिस्टी नै, गिण कै आँगळियाँ पै धरदे।
ग्यान्नी जन नै न्यूँ-क्के-न्यूँ सुण, उन नै बी इब अर्जन, मत्तैँ॥ १९

सर्वभूतेषु येनैकं, भावमव्ययमीक्षते।
अविभक्तं विभक्तेषु, तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्।। २०

(ग्यान के ये तीन भेद सैँ)

[१]पाँच भूत तैँ बणी खड़ी इन, जड़ अर चेतन सब चीज्जाँ मैँ।
सब काळाँ मैँ, सब जाग्घाँ मैँ, अविनासी एक ततव नै पा।।
उस नै देक्खै माणस स्याम्हीँ, नहीँ बँड्या वो बँड्याँ-खिण्ढयाँ मैँ।
न्यारे-न्यारे दिखदे सब मैँ, 'ग्यान' समझ ले सतोगुणी वो।।
होणा, केवल, होणा सत् सै, सबै अँधेरे इस तैँ दूरै।
टूट्टण आळी, बिगड़ण आळी, टूट्टे पाच्छै जो सै रहँदा।।

एक अनादी ओर अनन्ता, वो ए दीक्खै, सत् के दूज्जा?॥ २०

पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं, नानाभावान् पृथग्विधान्।
वेत्ति सर्वेषु भूतेषु, तज्ज्ञानं विद्धि राजसम्।। २१

[२]अलग-अलग कर अलग रूप मैँ, सब देहाँ मैँ भिन-भिन होन्दा।
न्यारी-न्यारी तह्नियाँ का जो, 'ग्यान' जणावै उस नै अर्जन।
'ग्यान' समझ ले रज गुण आळा॥ २१

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्, कार्ये सक्तमहैतुकम्।
अतत्त्वार्थवदल्पं च, तत् तामसमुदाहृतम्।। २२

[३]जो तो सम्पूरण की तह्नियाँ, एक वस्तु काया मूरत नै।
बिसै बणा कैँ उस मैँ लाग्गै, बिना युकत कै, बिना कारणै।।
सार किमे नाँ जिस मैँ होवै, थोड़ै बिसयाँ अर फळ आळा।
तमोगुणी वो ग्यान बताया॥ २२

नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम्।
अफलप्रेप्सुना कर्म, यत् तत् सात्त्विकमुच्यते।। २३

(करमाँ के बी तीन भेद सैँ)

[१]सास्त्र बतावै जिस नै निस्चित, माणस खात्तर करणा, करणा ए।
करणा सै यो नित न्यूँ अर, [२]जाण समझ कैँ आसक्ति-रहित।।
[३]राग, द्वेस बी दूर राख कैँ, कर्या करम जो [४]फळ नाँ चाहँदे।
जो सै करम इसा, सै वो ए, सतोगुणी कह बोल्ल्या जान्दा॥ २३

यत्तु कामेप्सुना कर्म, साहङ्कारेण वा पुनः।
क्रियते बहुलायासं, तद्राजसमुदाहृतम्।। २४

[१]जो तो मन नै आच्छे लाग्गैँ, वो फळ चाह् कैँ करम कर्या ज्या।
[२]"मैँ यो करणा', न्यूँ 'मैँ' मैँ, करदा माणस या फिर उस नै।।
दरप गरब तैँ, फूल घमँड तैँ, नाड़ उठा कैँ इत-उत देक्खै।
[३]कस्ट भोत से सह कैँ कर कैँ, मीन्हत भोत्ती कर कैँ होवै।

'रजगुण आळा करम कर्‌या वो', बोल्ल्या जाँदा सै रै अर्जन॥ २४

अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम्।
मोहादारभ्यते कर्म, यत् तत् तामसमुच्यते।। २५

[१]जो कर बँधदा पाच्छै माणस, उस कै फळ नै भोग्गण खात्तर।
जलम, मरण तैं, राग, द्वेस तैं, काम क्रोध तैं अर सुख दुख तैं।।
आच्छै, माड़ै उस फळ नै अर, [२]जन धन, सक्ती की हानी नै।
[३]ओर किसै कै कस्ट दुक्ख नै, [४]देक्ख्याँ बिन आप्णी ताक्कत नै।।
[५]मोह् मैं पड़ कैं, बहकावै मैं आ, मूरखता तैं, नाँ-समझी तैं।
करम कर्‌या ज्या जो सै अर्जन, तमोगुणी वो बोल्ल्या जावै॥ २५

मुक्तसङ्गोऽनहंवादी, धृत्युत्साहसमन्वितः।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः, कर्ता सात्त्विक उच्यते।। २६

(तीन तह्याँ का कर्ता हो सै)

[१]सोच-समझ कैं, सुभाव तैं या, आसक्ति चीज मैं जो छोड्डै।
[२]'मैं-मैं' बी जो बोल्लणियाँ नाँ, [३]थ्यावस [४]हिम्मत तैं हो पूरण।।
[५]काम बणै या नाँ बण पावै, बिगड़ै नाँ ए मन पर उस का।
सुख दुख मन मैं नाँ ए मान्नै, इसा करणियाँ माणस अर्जन।
बोल्ल्या जान्दा सतोगुणी सै॥ २६

रागी कर्मफलप्रेप्सुर्, लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः।
हर्षशोकान्वितः कर्ता, राजसः परिकीर्तितः।। २७

[१]फँस्या पड्‌या हो भोग्गाँ मैं मन, उन कै रँग मैं रँग्या, धँस्या हो।
[२]करमाँ का फळ पाणा चाह्वै, फळ पाणै नै ए करम करै।।
[३]लोभी, [४]औराँ नै पीड़ा अर, कस्ट देणियाँ, हो [५]अपवित्तर।
तन मन वाणी तैं हो गन्दा, [६]ब्योहाराँ मैं नाँ सुच्चा।।
[७]पा कैं कुछ खुस, [८]खौ कैं दुक्खी, [९]मूँह लटका कैं बैट्ठणियाँ।
ग्यान्नीराम बतावैं यो सैं, इसा करणियाँ रजोगुणी सै।

सिवनारायण बी न्यूँ कहँदा॥ २७

अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः, शठो
नैष्कृतिकोऽलसः।
विषादी दीर्घसूत्री च, कर्ता तामस उच्यते।। २८

[१]नाँ काब्बू मैं मन निचळा, बिसयाँ पाच्छै भाज्ज्या रहँदा।
[२]खाणा, पीणा, सोणा, डरणा, मन मर्जी तैं चाल्लै करदा।।
सुभा प्रव्रित्ती अनगढ जिस की, देहधरम मैं रमड्‌या रहँदा।
[३]ढीठ, अड़णियाँ थम्बै-सा जो, अकड़ू-फकड़ू, झुक नाँ सकदा।।
आप्णी गल्ती जो नाँ मान्नै, [४]दुस्ट, प्रपञ्ची, छळ्-छन्दी अर।
[५]ओराँ नै जो नीच्चा समझै, अपमान करै अर जो उन का।।
[६]'अ-लस' अळकसी ओर निकम्मा, सोभा नाँ जो पावै बैट्ठ्या।
[७]रहै निरासा मैं अर दुक्खी, [८]लाम्बी कात्तै मामूली-से बी।।
काम्माँ मैं जो देर लगावै, इसा करणियाँ तमोगुणी सै।
कहँदे ग्यान्नीराम इसा सैं, दमकस सिवनारायण बी सै॥ २८

बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव, गुणतस्त्रिविधं शृणु।
प्रोच्यमानमशेषेण, पृथक्त्वेन धनंजय।। २९

(समझ'र थ्यावस तीन तह्याँ के)

बुद्धी के अर थ्यावस के बी, गुण कै कारण तीन तह्याँ के।
भेद्दाँ नै तैं सुण ले अर्जन, तीन तह्याँ के बता रह्या मैं।।
बाक्की नाँ कुछ छोड, अलग तैं, जुद्ध जीत कैं दुस्मन का रै।
माळ जीतणै आळे अर्जन॥ २९

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च, कार्याकार्ये भयाभये।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति, बुद्धिः सा पार्थ, सात्त्विकी।। ३०

(सतोगुणी बुद्धी)

[१]आच्छे काम्माँ मैं लाग्गण नै, [२]बुरै करम तैं हटण, बचण नै।

[३]करणै जोग्गा, [४]जो नाँ करणा, इन नै [५]कित कद अर किस तैँ सै।।
चहिये डरणा, अर [६]डरणा नाँ, डर ओर निडरता, दोन्नूँ नै।
[७]बँधदा कद, कित, किस कै कारण, यो, अर [८]नर छूट्टै किस तह्नियाँ।
यो जो जाणै समझै बुद्धी, वा पिरथासुत, सतोगुणी सै॥ ३०

यया धर्ममधर्मं च, कार्यं चाकार्यमेव च।
अयथावत्प्रजानाति, बुद्धिः सा पार्थ राजसी।। ३१

[१]जो ए कर कैँ सही तह्नाँ तैँ, चाल्लै जग, हो उस का धारण।
कस्ट दुक्ख मैँ गिरण पड़ण तैँ, बचदा माणस जो करणैँ तैँ।।
'धर्म' कुहावै सै वो करणाँ, [२]जो करणैँ तैँ हों दुख बाधा।
धरमबिरोधी उस करणै नै, 'अधरम' कहँदे ग्यान्नी जन सैँ।।
[३]करणा जो अर [४]नाँ ए करणा, [५]सै जिस तह्नियाँ का, उस तह्नियाँ।
नाँ जाणै जो बुद्धी, वा सै, रजोगुणी, तैँ या जाण समझ।।
हे पिरथा भूआ के सुत अर्जन॥ ३१

अधर्मं धर्ममिति या, मन्यते तमसा वृता।
सर्वार्थान् विपरीतांश्च, बुद्धिः सा पार्थ तामसी।। ३२

[१]अधरम नै जो धरम समझदी, [२]गलत सही मैँ फरक न करदी।
[३]अग्ग्यान अँधेरा जित छाया, [४]सारे ग्यानबिसै जो, उन नै।।
उल्टा समझै समझावै जो, वा बुद्धी सै पिरथा के सुत।
अर्जन तमोगुणी यो समझो॥ ३२

धृत्या यया धारयते, मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः।
योगेनाव्यभिचारिण्या, धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी।। ३३

थ्यावस, धीरज, टिकणा मन का, आप्णै निस्चै पै द्रिढ रहणा।
जिस तैँ माणस [१]धारण करदा, मन प्राण'अर सारी इन्द्री की।।
किरिया, चेस्टा सारी ए वैँ, [२]मन नै कर कैँ एकाग्गर अर।
काब्बू मैँ कर ओर कितै नाँ, जान्दै टिकदै धीरज तैँ सै।

थ्यावस, ध्रिति वो धीरज अर्जन, पिरथा के सुत, सतोगुणी सै॥ ३३

यया तु धर्मकामार्थान्, धृत्या धारयतेऽर्जुन।
प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी, धृतिः सा पार्थ राजसी।।
३ ४

जिस धीरज तैँ तो सै अर्जन, धर्म, काम अर, अर्थ पदारथ।
'धर्म' धरै जो जीवन धार्‌या, कर्म करै जो माणस परहित।।
परलोक लोक नै वो साद्धै, देह धर्‌यै का यही प्रयोजन।
'इच्छा' कै सँग जलमै प्राणी, इच्छापूर्ती ओर प्रयोजन।।
'धर्म', 'काम' हों दोन्नूँ पूरण, 'अर्थ' प्रयोजन साद्धण तैँ सैँ।
जिस धीरज तैँ इन नै धारै, धारै आसक्ती तैँ बँध कैँ।
चाहै फळ जो धीरज वो हे, पिरथा के सुत, रजोगुणी सै।। ३४

यया स्वप्नं भयं शोकं, विषादं मदमेव च।
न विमुञ्चति दुर्मेधा, धृतिः सा पार्थ तामसी।। ३५

जिस तैँ [१]सोणा, [२]डर अर, कोए, [३]प्यारी चीज बिछड़ कैँ होवै।
सोग चित्त मैँ भारी अर, [४]मन बी बैठ्ठ्या, दुखी रहै जो।।
[५]तन, जन, धन, बल, बिद्या, सोहरत, नसा घणा इन का, ऐब्बाँ का।
इन नै छोड्डै नहीँ कुबुद्धी, थ्यावस, पारथ तमोगुणी वो॥ ३५

सुखं त्विदानीं त्रिविधं, शृणु मे भरतर्षभ।
(सुख बी हो सै तीन तह्नाँ का)

सुख बी यो तीन तह्नाँ का तैँ, सुण मत्तै भरताँ मैँ आच्छे।
अभ्यासाद्रमते यत्र, दुःखान्तं च निगच्छति।। ३६
(सुख का लच्छण)

बार बार कर रमड़ै जिस मैँ, आनँद माणस मान्नै सै अर।
ओड़ दुःख का पावै सै जो, वो ए भाव कुहावै सुख सै।। ३६

यत्तदग्रे विषमिव, परिणामेऽमृतोपमम्।
तत् सुखं सात्त्विकं, प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम्।। ३७

(तीन तह्हाँ का सुख)

[१]जो वो पहल्याँ झैर-जिसा हो, आक्खर मैँ हो इमरत बरगा।
वो सुख सतोगुणी सै बोल्ल्या, आप्णी मत की निर्मळता तैँ।
उत्पन होन्दा भीत्तर तैँ वो, ग्यान्नी कै अर खूब्बै हो सै॥ ३७

विषयेन्द्रियसंयोगाद्, यत् तदग्रेऽमृतोपमम्।
परिणामे विषमिव, तत्सुखं राजसं स्मृतम्।। ३८

[२]सुन्दर महकै ओर रसीली, नरम-गरम अर ठण्डी भावै।
कान्नाँ मैँ जो इमरत घोळै, इसी चीज नै देख सूँघ कैँ।।
चाख जिबै अर छू कैँ सुण कै, आनँद मान्नै जो, सुख वो सै।
इन्द्री बिसयाँ कै जुड़नै तैँ, सुख जो होवै माणस नै सै।।
वो पहल्याँ इमरत-सा लाग्गै, [३]आक्खर मैँ पर झैर जिसा हो।
वो सुख रजोगुणी कर कैँ न्यूँ, याद कर्‌या जा दुनियाँ मैँ सै॥ ३८

यदग्रे चानुबन्धे च, सुखं मोहनमात्मनः।
निद्राऽऽलस्यप्रमादोत्थं, तत्तामसमुदाहृतम्।। ३९

(तमोगुणी सुख)

[४]जो पहल्याँ अर पाच्छै बी सुख, मोह् मैँ गेरै बुद्धी नै सै।
नींद'र अळकस गफलत तैँ जो, हो सै वो तमोगुणी बोल्ल्या॥ ३९

न तदस्ति पृथिव्यां वा, दिवि देवेषु वा पुनः।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं, यदेभिः स्यात् त्रिभिर्गुणैः।। ४०

(किम्मे नाँ सै छुट्‌या गुणाँ तैँ)

नाँ वो सै धरती पै कोए, सुरगाँ मैँ देवाँ मैँ या फिर।
चीज इसी सै आप्णी जड़ मैँ, मूल प्रक्रिति मैँ होणै आळे।
छूट्टया सै इन तीन गुणाँ तैँ॥ ४०

ब्राह्मणक्षत्रियविशां, शूद्राणां च परंतप।
कर्माणि प्रविभक्तानि, स्वभावप्रभवैर्गुणैः।। ४१

(सुभा गुणाँ तैँ बरण बणै सैँ)

ब्राम्हण, छत्री, बैस्साँ के अर, सूद्राँ के हे दुस्मन नै तैँ।
कस्ट देणिये, ताप चढाणे, अर्जन, करम बँड़े सैँ उन के।
आप्णै होणै सँग वैँ जिस ए, सुभा धरम तैँ परगट होन्दे।
तीन गुणाँ कै कारण सैँ सब॥ ४१

शमो दमस्तपः शौचं, क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं, ब्रह्मकर्म स्वभावजम्।। ४२

(नो गुण हों तो बाम्हण होवै)

[१]मन की स्यान्ती ओर [२]दबाणा, बिसयाँ कान्हीँ भाज्जी जान्दी।
सारी इन्द्री जो सैँ, उन नै, [३]तन नै मन नै कस्ट देण की।।
करी तपस्या सुद्ध-करण नै, स्योन्नै नै ज्यूँ लोग तपाँदे।
कुन्दन करदे खोट जळाँ कैँ, [४]सुद्धी अर जो तन मन पै सै।।
मैल जमी या परत-परत कर, वा करणा तन मन वाणी अर।
ब्योहाराँ मैँ सुच्चापण ल्या, [५]क्समा भाव सै बुरा कर्‌या अर।।
[६]भूण्डा फूड़्हा, बिसह्या बोल्ल्या, सब नै सहँदा दुख नाँ मान्नै।
[७]माफ करै गल्ती ओराँ की, [६]कथणी, करणी, सोच मनुख की।।
बोल्लण बतलावण बी सीद्धी, [७]ग्यान समझणा बिसै ग्रन्थ का।
जाणन आळ्याँ गुरुआँ पाः जा, ओर [८]ग्रन्थ बी बाँच-बूँच कैँ।।
पड़्ह्या जो या समझ न आया, उस नै अनुभव कर कैँ जाणै।
[९]आस्तिकता हो मान किमे कुछ, तरक, युक्ति तैँ परमाणाँ तैँ।।
उप्पर होन्दी चीज परम कुछ, नो ये गुण सुभाव तैँ उत्पन।
कर्म कहे सैँ बाम्हण के सब॥ ४२

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं, युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च, क्षात्रं कर्म स्वभावजम्।। ४३

(छत्री बणदा सात गुणाँ तैँ)

[१]आप्णै तैँ बलवान सत्रु पै, हिम्मत चढणै की तेज्जी तैँ।

[२]तेज दूर तैँ ए झळ मारै, [३]थ्यावस धीरज, टिकै बात पै।।
तन मन नै जिद कस्ट भोत हो, बणदे काम बिगड़दे दीक्खैं।
बिपदा आवै घोर भयङ्कर, तद बी धीरज नाँ ए हारै।।
[४]'दाक्ष्य' चतुरता नीतिकुसलता, बिगड़ी बात बणाणा जाणै।
[५]जुद्धछेत्र तैँ करमछेत्र तैँ नहीँ भाजणा, डट्टच्या रहणा।।
[६]'दान' प्रव्रित्ती खुल्है दिल तैँ, देस काल अर पात्र सोच कैँ।
ऐब्बाँ तैँ जो दूर रहैँ उन, गुणियाँ ओर जरूरतमँद नै।।
जीवनसाधन वस्तू बाँड्डै, [७]आस्रित सरणागत की।
रक्सा करणी जिम्मेदारी, सही राह पै राक्खण खात्तर।।
परजा पर सासक मालक हो, राज करण की रहै प्रव्रित्ती।
राक्खै आप्णी ठकुराई, सात करम ये छत्री के सैँ।।
पैदा होन्दै सँग ये उत्पन, छत्री की ये सात निसान्नी।
रजगुण आळै सुभा कारणै, सान निराळी इन तैँ आ ळी॥ ४३

कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं, वैश्यकर्म स्वभावजम्।

(बैस्स्य बणावैँ करम तीन सैँ)

[१]खेत्ती-बाड़ी, [२]पसु-पालन कर, हरियाळी अर धोळी दोलत।
[३]भोग्गण की अर चीज बणा कैँ, पोँह्च्या इन नै सही जघाँ पै।।
गलत मुनाफा इन पै नाँ ले, ब्याज, किराया, साहूकारी।
इन तैँ खुद अर ओराँ की बी, सेवा करणा बैस्य प्रव्रित्ती।।

परिचर्यात्मकं कर्म, शूद्रस्यापि स्वभावजम्।। ४४

(सूद्र बणावै सेवा का गुण)

इन तीन्नूँ के करमाँ मैँ नित, आप्णी सक्ती ग्यान करम तैँ।
साथ निभावैँ कला सिलप तैँ, कारीगर यैँ सेवा कर कैँ।।
सुभ सैँ होवैँ देस काल तैँ, ऊप्पर हो कैँ दुनियाँ कै हित।
सूद्र वर्ण का, कारीगर का, करम सुभाविक होवै यो सै।।

(कोण बरण मैँ के गुण मुखिया)

[१]बिप्र भाव मैँ सतगुण मुखिया, उस तैँ नीच्चा रजगुण होवै।
तामस गुण हो मामूली-सा, [२]क्सात्र व्रित्ति मैँ रजगुण मुखिया।।
उस तैँ नीच्चै ओर सतोगुण, कमती होवै तमगुण बिल्कुल।
[३]बैस सुभा मैँ रज, तम, सत् हौँ, मुख्य गौण अर कमती क्रम तैँ।।
तम गुण कम नाँ होवै जो तो, लालच त्रिस्णा स्वार्थ प्रबल हौँ।
[४]सूद्र भाव मैँ तम्, रज, सत हौँ, मुख्य गौण अर भोत्तै कम न्यूँ।।

(कद्दे कोए भाव जागदा)

प्रारब्ध करम भोग्गण खात्तर, काया मिलदी प्राणी नै जो।
गुण सुभाव तैँ चाल्है या सै, तान्ना-बान्ना बण्या विचित्तर।।
अबूझ पहेली-सा यो बस्तर, कोण तार सै कित जा भिड़ ज्या।
चाल्ली चाल्ली काया मैँ बी, रङ्ग बिरङ्गे बणैँ डिजाइन।।
कद्दे कोए भाव जागदा, सोवै कद्दे भाव ओपरा।
रोज-रोज बी घटैँ बढैँ ये, देस, काळ के, तन के, मन के।।
भाव बदलदे बदलै सब कुछ, जड़ अर चेतन सब कुछ बदलै।
माणस मैँ बी ब्राह्मण व्रित्ती, कदे प्रबल हो छत्रिय व्रित्ती।।
बैस सुभावी कदे बणै वो, तमस् दबावै और गुणाँ नै।
सूद्दर बण ज्याँ पण्डत ग्यान्नी, पण्डत ग्यान्नी सूद्दर बण ज्याँ।।
सत रज तम कै गुण सुभाव की, मुखिया, मद्धम, कमतर स्थिति मैँ।
मुख्य भाव तैँ वर्णव्यवस्था, मुख्य भाव ये जनम समै तैँ।।
होणै कारण 'जाति' कुहावैँ, न्याय सास्त्र की जाती नाँ या।
जाती या नाँ किसै बंस मैँ, कुल मैँ घर ओर घरान्नै मैँ।।
जलम लेण तैँ कद्दे होवै सुभा, धरम तैँ, करतब तैँ ए।
जात बणै सै ईस्स्वर की दी, जलम लेण तैँ अधिकार नहीँ या।।

(जात नहीँ अधिकार जनम तैँ)

करतब कारण बणै जात सै, सुभा करावै करतब सब तैँ।
किरसण नै या बात कही न्यूँ, छोड्डयैँ इस नै हिन्दू दुक्खी।।

मान इसे नाँ टूट्टे फरड़े, हिन्दू सारे बँडे खिँडे सैँ।
पूळी नाँ सैँ बण कैँ रहँदे, थोड़ी-सी ए बाळ उडावै।।
आँख खोल कैँ देक्खो भाई, जात-पाँत नै, ऊँच-नीच नै।
बरण भेद नै, बाँड न देक्खो, पूज्जो गुण नै जलम न पूज्जो।।
बाप्पू तैँ बेट्टै ने आन्दा, अधिकार जात का इब छोड्डो।
सुभा जिसा जो जिस का सै वो, उस तैँ जाणा ठोड़ बैठणा॥ ४४

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः, संसिद्धिं लभते नरः।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं, यथा विन्दति तच्छृणु।। ४५

(सुभाव करम तैँ सिद्धि मिलै सै)

आप्णै-आप्णै गुण-सुभाव कै, पाच्छै चाल्लै स्वाभाविक जो।
सास्तर अर देस समाज्जाँ मैँ, जिसा बताया जिसबिध करणा।।
उसै करम मैँ पूरी तह्रियाँ, लाग्गया रहँदा खुस जो माणस।
आच्छी सिद्धी, पूर्ण सफळता, जीणै की वो पावै अर्जन।।
रज तम तैँ जो मन मैँ आए, मैल हटैँ सैँ होळै-होळै।
इसै करम तैँ, इस तैँ माणस, ततवग्यान कै जोग बणै सै॥ ४५

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां, येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य, सिद्धिं विन्दति मानवः।।४६

जिस तैँ उत्पत्ती अर चेष्टा, पाँच भूत के पुतळ्याँ की हो।
जिस अन्तर्यामी नै सब या, पकड़ इन्द्रियाँ की मैँ आई।।
दुनियाँ सारी धरी बणा कैँ, कण-कण मैँ सै ओर समाया।
गुण सुभाव तैँ कर्‌यै करम नै, अर्पित उस अन्तर्यामी की।।
पूजा, कर कैँ सिद्धी पावै, मनन'र चिन्तन करणै आळा।
मन एकागर कर कैँ वो फिर, मनु की सन्तति उत्तम माणस।
ब्रह्मग्यान कै जोग बणै सै॥ ४६

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः, परधर्मात् स्वनुष्ठितात्।
स्वभावनियतं कर्म, कुर्वन् नाप्नोति किल्बिषम्।।४७

(सुभा गुणाँ का करम स्रेस्ठ सै)

गुण सुभाव पै आस्रित आप्णा, करतब चाहे माड़ा होवै।
ओर किसै कै सही ढङ्ग तैँ, सही बिधी तैँ कर्‌यै करम तैँ।।
बेहतर कल्ल्याण करै वो सै, गुण सुभाव नै देख बताया।
ओर कर्‌या जो, उस तैँ निस्चित, सास्त्राँ गुरुआँ दुनियाँ नै सै।
उस नै करदा माणस जो सै, नाँ वो पावै पाप कदे बी॥ ४७

सहजं कर्म कौन्तेय, सदोषमपि न त्यजेत्।
सर्वारम्भा हि दोषेण, धूमेनाग्निरिवावृताः।। ४८

(सब करमाँ मैं कमियाँ हौं सैँ)

साथ देह कै बण्या, सुभाविक, करम, पुत्र हे कुन्ती के जो।
खोट्टा, माड़ा, कमियाँ आळा, होवै, तो बी वो नाँ छोड्डै।।
क्यूँकी आप्णे ओर पराए, सब करमाँ मैँ दोस रहैँ सैँ।
धूम्मै सँग ज्यूँ अग्नी रहँदा, जित सै धूम्माँ, उत सै अग्नी।।
सम्बन्ध जगत् मैँ यो दीक्खै, न्यूँ ए कोए करम इसा नाँ।
कमी नहीँ हो कोए जिस मैँ॥ ४८

असक्तबुद्धिः सर्वत्र, जितात्मा विगतस्पृहः।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां, संन्यासेनाधिगच्छति।। ४९

(राग न जिस कै सिद्ध बडा वो)

बँधी फँसी नाँ बुद्धी जिस की, उन सब मैँ जित माणस फँसदा।
जीत्या आप्णा आप्पा जिस नै, नाँ सै जिस कै इच्छा, तिस्णा।।
कर्म त्याग कैँ होणै आळी, सब तैँ बड्डी सिद्धी नै सै।
कर्मफळाँ कै त्याग कारणै, करम न उस नै बाँध सकैँ सैँ।।
[१]प्रारब्ध करम भोग जीवदा, [२]जिन का फळ नाँ चाह्या उस नै।
जीन्दै जी जो करे इसे सैँ, उन का फळ वो भोग्गैगा नाँ।।
[३]कट्ठे होए, [४]होंगे पाच्छै, उन की बारी आवण तक वो।
नहीँ रहैगा देहबन्ध मैँ, जीवन्मुक्ती न्यूँ वो पा कैँ।

या काया तज फेर न जलमै, फेर न जलमै, नाँ ए जलमै॥ ४९

सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म, तथाप्नोति निबोध
म ।
समासेनैव कौन्तेय, निष्ठा ज्ञानस्य या परा।।५०

(राग द्वेस तज ब्रह्मै हो सै)

गुण सुभाव पै आस्रित सारे, कर्माँ नै कर अर्पित प्रभु नै।
चित्त सुद्ध हो उस अर्पण तैँ, ग्यान राह पै बढदा आग्गै।।
जाणै आत्मा नै जिस तह्रियाँ, समझ तरीक्का वो तैँ मत्तैँ।
थोड़े सबदाँ मैँ ए अर्जन, ओड़ ग्यान का जो परला सै॥ ५०

बुद्ध्या विशुद्धया युक्तो, धृत्यात्मानं नियम्य च।
शब्दादीन् विषयांस्त्यक्त्वा, रागद्वेषौ व्युदस्य च।।५१

[१]बुद्धी होई न्यूँ जो निर्मळ, उस आळा माणस धीरज तैँ।
पाँच भूत के कारज काया, उस मैँ स्थित अर ग्यान करम के।।
साधन उत्तम ग्यारा इन्द्री, इन कै ऊप्पर स्थित बुद्धी।
सतगुणियाँ वो होणै कारण, स्फटिक मणी-सी निर्मल सै अर।।
पार दिखान्दी, उस मैँ भासै, आतम की छवि, जिस कै कारण।
समझै बुद्धी चेतन खुद नै, आभासित उस चेतन कारण।।
[२]उस इस आप्णै आप्पै नै फिर, मन की डोरी ढील्ली कर कैँ।
धीरज तैँ ए काब्बू कर कैँ, [३]जिन नै भोग मनुख सै बँधदा।।
उन बिसयाँ नै ठोड़ बिठा कैँ, उन मैँ आनँद नाँ ए लेन्दा।
[४]यो सै आच्छा, प्यारा लाग्गै, यो सै भूण्डा, भोत दुक्ख दे।
राग द्वेस न्यूँ मन मैँ नाँ ल्या, सङ्कल्प न करणै दे मन नै॥ ५१

विविक्तसेवी लघ्वाशी, यतवाक्कायमानसः।
ध्यानयोगपरो नित्यं, वैराग्यं समुपाश्रितः।।५२

[५]भीड़-भाड़ तैँ सदा बचणियाँ, कूणै रहँदा आनँद लेन्दा।

[६]हळ्का, थोड़ा खाणै आळा, [७]मोन साध कैँ बाणी नै अर।।
[८]योगासन तैँ काया नै अर, [९]सङ्कल्प त्याग कैँ मन नै बस मैँ।
रखदा माणस न्यूँ इन सब नै, [१०]आत्मस्वरूप कै चिन्तन मैँ लग।।
उस पै एकाग्र कर्यै चित नै, राख हमेसा इस तह्रियाँ अर।
[११]मन नाँ रँगणै दे बिसयाँ तैँ, राग न पाळै किसै बिसै मैँ॥ ५२

अहंकारं बलं दर्पं, कामं क्रोधं परिग्रहम्।
विमुच्य निर्ममः शान्तो, ब्रह्मभूयाय कल्पते।।५३

[१२]इन्द्री मन अर बुद्धी आळी, काया नै ए 'मैँ' जो जाणै।
इस कै कारण 'मैँ', 'मैँ' करणा, [१३]धन जन तन मन बुद्धी सिद्धी।।
इन की ताकत, ओर [१४]म्हसूसी, [१५]इच्छा, [१६]क्रोध'र [१७]गैर जरूरी।
साधन राक्खे सुख की खात्तर, इन नै छोड्डै [१८]ममता त्याग्गै।।
'मेरा कित के?,' 'मैँ ए कोन्या', मेरैपण का भाव छोड कैँ।
[१९]स्यान्ति परम वो पाया माणस, काम-क्रोध-सी बिसै आग सै।।
धँधकैँ खुल कैँ जिस दुनियाँ मैँ, उस मैँ रह बी स्यान्ती पाया।
जीन्दा ए वो मुक्त रहै सै, दुक्ख द्वन्द्व तैँ सारी तह्रियाँ।
ब्रह्म होण मैँ समरथ हो सै॥ ५३

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा, न शोचति न काङ्क्षति।
समः सर्वेषु भूतेषु, मद्भक्तिं लभते पराम्।।५४

(ब्रह्मरूप बण्यै के लच्छण)

ब्रह्मरूप जो होया माणस, [१]आनँदमय वो हो ज्या निस्चै।
[२]नाँ सोच करै, [३]नाँ कुछ चाह्वै, [४]एक जिसा सब भूत्ताँ कै प्रति।
[५]मेरी भक्ती पावै उत्तम॥ ५४

भक्त्या मामभिजानाति, यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा, विशते तदनन्तरम्।।५५

[६]ग्यान सरूपी उस भक्ती तैँ वो, मन्नै जाणै 'जितणा', 'जो सूँ'।
'जितणा सूँ' उपाधियाँ कारण, 'जो सूँ', जिब हौं नहीँ उपाधी।।

'ततव', भाव वो मेरा जाणै, [७]पाच्छै मेरा स्वरूप जाण कैं।
'मैं सूँ जो' या बात समझ कैं, आप्णी 'जीव' उपाधी तज कैं।
मैं ए हो कैं मुझ मैं मिल ज्या, उस कै पाच्छै माणस वो सै॥ ५५

सर्वकर्माण्यपि सदा, कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः।
मत्प्रसादादवाप्नोति, शाश्वतं पदमव्ययम्।। ५६

[८]आच्छे, माड़े सुभ ओर असुभ, सास्त्र समाज बताए, रोक्के।
चाह् कैं फळ या करदा होवै, किसी निमित्त तैं करदा या हो।।
सबी तह्ाँ के कर्म हमेसा, करदा आ कैं मेरी सरणै।
कर कैं मन्नै कर्म समर्पित, मेरी किरपा तैं वो पावै।
नित्य अनासी ठाँ अविकारी॥ ५६

चेतसा सर्वकर्माणि, मयि संन्यस्य मत्परः।
बुद्धियोगमुपाश्रित्य, मच्चित्तः सततं भव।। ५७

(अर्जुन तैं दी सल्हा किसन नै)

[१]आच्छे माड़े स्वाभाविक सब, दृस्ट अदृस्ट प्रयोजन आळे।
नित, नैमित्तिक ओर काम्य बी, सबी तह्ाँ के सब करमाँ नै।।
मन तैं तज कर मुझ पर अर्पित, मुझ पर हो कैं आस्रित अर्जन।
मन्नै सब तैं ऊप्पर बड्डा, समझणियाँ तैं हो ज्या अर्जन।।
[२]ज्ञानयोग पै हो कैं आस्रित, स्वरूप समझ कैं साङ्ख्य बुद्धि तैं।
[३]करमयोग नै जीवन मैं ले, [४]मन्नै रखदा आप्णै मन मैं।
मेरै मैं ए चित्त लगा ले, नित्य, निरन्तर, जीवै जिब तक॥ ५७

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि, मत्प्रसादात्तरिष्यसि।
अथ चेत् त्वमहंकारान्, न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि।। ५८

[५]मुझ पै आप्णा चित्त लगा कैं, [६]मन्नै अर्पित मन नै कर कैं।
मन्नै ए तैं मन मैं रखदा, सारी दुर्गम कठिनाई जो।।
तेरै रस्तै पै आवैंगी, मेरी किरपा तैं, तैं उन नै।

पाच्छै छोड्डैगा, अर जै तैं, 'मैं' मैं आ कैं नहीं सुणैगा।
सबबिध होगा नस्ट अरै तैं।। ५८

यदहंकारमाश्रित्य, न योत्स्य इति मन्यसे।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते, प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति।। ५९

(गलत कर्‌या सै निर्णै तन्नै)

जै ''मैं अर्जन कौरूबंसी, आपणै गरुआँ भाइयाँ नै नाँ।
जुध मैं मैं इब झोक्कूँगा अर, नास न इन का करूँ, कराऊँ।।
नहीं लड़ूँगा, निस्चै मेरा,'' न्यूँ तैं मान्नै सै झूट्ठा।
यो निस्चै तेरा रै अर्जन, के सै तेरी औकात भला?।
होणी ओर सुभा बी तन्नै, ईब लगावैं गे इस जुध मैं॥ ५९

स्वभावजेन कौन्तेय, निबद्धः स्वेन कर्मणा।
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्, करिष्यस्यवशोऽपि तत्।। ६०

(सुभा ठाकरी लड़वावैगा)

रजगुण सँग तैं छत्री जाम्या, धर्मसुरक्षा खात्तर मरणा।
ओर मारणा कर्तब तेरा, सुभाव बी तो यो ए पाया।
कुन्ती के सुत अर्जन, उस्सै, रजगुण कारण बण्यै सुभा तैं।
बँध्या खड़्या तैं बेबस आप्णै, लड़णै-भिड़णै कै कर्तब तैं।
करणा नाँ तैं चाह्वै इब जो, हङ्कार मोह कै कारण सै।
करणा होगा बेबस हो कैं, नाँ चाँह्दे बी वो रै अर्जन॥ ६०

ईश्वरः सर्वभूतानां, हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन् सर्वभूतानि, यन्त्रारूढानि मायया।। ६१

(हिरदै मैं बड़ ईस्स्वर नाँच नचावै)

ईस्स्वर, मालक, सासन करदा, दुनियाँ पै वो सब भूत्ताँ की।
पाँच ततव तैं बण्यै सबै की, बुद्धिगुफा मैं अर्जन, बैट्ठ्या।।
भरमाँदा चकरी पै चड्ढे, पाँच ततव तैं बण्याँ सबी नै।

'माया' आण्णी सत रज तम तैँ, ब्रह्माण्ड भाँड की रचना करदी।
उस सक्ति अविद्या कै द्वारा॥ ६१

तमेव शरणं गच्छ, सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात् परां शान्तिं, स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।। ६२

(ईस्स्वर की तैँ सरण चल्या जा)

उस की ए तैँ सरण चल्या ज्या, सबी तह्याँ तैँ, तन मन मति तैँ।
भरतबंस मैँ जाए अर्जन, उस की किरपा पा कैँ परली।।
जिस कै ऊप्पर कोए नाँ सै, वा स्यान्ती, ठाँ पावैगा तैँ।
'सास्वत', नित्य, सनातन जो सै॥ ६२

इति ते ज्ञानमाख्यातं, गुह्याद् गुह्यतरं मया।
विमृश्यैतदशेषेण, यथेच्छसि तथा कुरु।। ६३

(कर जो तन्नै आच्छा लाग्गै)

न्यूँ तन्नै सै तेरै तईँ यो ग्यान बखाण्या, गहरै तैँ बी।
गहरा मन्नै सोच समझ यो पूरी तह्रियाँ, आग्गै पाच्छै।
छोड न किम्मे ज्यूँ तैँ चाह्वै, न्यूँ तैँ कर ले अर्जन, इब तो॥ ६३

सर्वगुह्यतमं भूयः, शृणु मे परमं वचः।
इष्टोऽसि मे दृढमिति, ततो वक्ष्यामि ते हितम्।।६४

(बात आखरी सुण ले मेरी)

सब तैँ जादा गुपत'र गहरी, सुण तैँ मेरी बात आखरी।
प्यारा तैँ सै मन्नै करड़ा, इस तैँ बोह्लूँ तेरा हित गा॥ ६४

मन्मना भव मद्भक्तो, मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते, प्रतिजाने प्रियोऽसि मे।।६५

[१]मेरै मैँ तैँ मन ला आण्णा, [२]मेरी ए सेवा मैँ लग ज्या।
मेरी भक्ती सरणागत कर, मेरा एक सहारा ले ले।।
[३]यग अर पूजा, दान करम सब, यैँ बी कर तैँ मेरी खात्तर।
[४]मेरै आग्गै लेट दण्डवत्, मन्नै ए तैँ नमन सदा कर।।

[५]'मन्नै ए तैँ पावै जा गा', साच्ची तन्नै करूँ प्रतिग्या।
वचन इसा मैँ देऊँ तन्नै, [६]प्यारा सै तैँ मन्नै अर्जन॥ ६५

सर्वधर्मान् परित्यज्य, मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो, मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। ६६

[६]जग यो सारा रहै चालदा, धरत्या रहै यो न्यूँ ए चलदा।
जघाँ समै अर पात्र समझ कैँ, व्यक्ति, समाज कै, जग कै हित मैँ।।
करम, नियम अर बिधि की रचना, लोक सास्त्र नै करी समझ कैँ।
नाँ जो व्यस्टि-समस्टीहित मैँ, वैँ सैँ करम नहीँ ए करणे।।
उन सब धर्माँ कर्माँ नै तज, [६]मेरी एक सरण मैँ आ ज्या।
मैँ तन्नै सब गेरणिये, जलम-मरण के सुख-दुख देन्दे।
पाप-पुण्य तैँ छुटवाऊँगा, मतन्या सोच करै तैँ अर्जन॥ ६६

इदं ते नातपस्काय, नाभक्ताय कदाचन।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं, न च मां योऽभ्यसूयति।। ६७

(गीत्ताग्यान न किन नै देणाँ)

यो तन्नै नाँ कहणा चहिए, [१]आच्छे-से कुछ करम करण नै।
नाँ तप्पी जो उस माणस नै, [२]नाँ भक्तिरहित जन नै कद्दे।
भक्ति बणावै नरम मनुख नै, गुण यो बड्डा ग्यान पाण नै।
[३]नाँ सुणना चाह्वै नाँ उस नै, [४]सेवा भाव न होवै जिस मैँ।
अर [५]नाँ उस नै, जो सै माणस, ईर्खा कर कैँ दोस लिकाड़ै।
उस नै बी तैँ नाँ यो कहणा॥ ६७

य इमं परमं गुह्यं, मद्भक्तेष्वभिधास्यति।
भक्तिं मयि परां कृत्वा, मामेवैष्यत्यसंशयः।। ६८

(भगताँ नै यो ग्यान बताणाँ)

जो नर परलै दरजै कै इस, गूढ ग्यान नै मेरी भगती।
करणाळ्याँ मैँ खोल्ह कहैगा, भगती मुझ मैँ परली कर कैँ।

मन्नै ए जाः गा, वो हो कैं, सारे संसै छिन-भिन होया॥ ६८

न च तस्मान् मनुष्येषु, कश्चिन् मे प्रियकृत्तमः।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि।। ६९

(उस तैं प्यारा मन्नै नाँ सै)

नाँ अर उस तैं मनुखाँ मैं सै, कोए मेरा प्यारा सब तैं।
होगा नाँ अर मेरा उस तैं, ओर घणा प्यारा धरती पै॥ ६९

अध्येष्यते च य इमं, धर्म्यं संवादमावयोः।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः।। ७०

(गीत्ता पढणैं का लाभ कह्या)

कण्ठ करै गा, समझै गा अर, जो धरम तैं नाँ दूर रहँदी।
इस बातचीत नै हाम् दो की, उस ग्यान यग्ग्य तैं वा मेरी।
पूजा होगी, यो मैं मान्नूँ॥ ७०

श्रद्धावाननसूयश्च, शृणुयादपि यो नरः।
सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्, प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम्।। ७१

सर्धा राक्खै, खोट न काड्डै, सुण बी ले जो माणस, वो बी।
जीत्ते जी ए बन्धन छूट्टया, तन तज मङ्गलमय लोक्काँ नै।
पावै पुण्य करणियाँ कै वो॥ ७१

कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ, त्वयैकाग्रेण चेतसा।
कच्चिदज्ञानसंमोहः, प्रणष्टस्ते धनंजय।। ७२

(अर्जन तेरा भरम मिट्या के?)

कै यो सुण्या प्रिथा के बेट्टे, तन्नै एकाग्ग्र कर्यै मन तैं?।
कै सै नाँ-समझी तैं होया, भरम भाज ग्या तेरा अर्जन?॥ ७२

अर्जुन उवाच

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा, त्वत्प्रसादान् मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः, करिष्ये वचनं तव।। ७३

अर्जन बोल्ल्या

(अर्जन नै हाँ मैं मूँड हलाया)

ततव किमे नाँ जाणूँ मैं था, नाँ-समझी तैं मोह घणा था।
भाज्ज्या मेरा मोह ईब सै, आप्पा जाण्या भूल्ल्या जो था।।
वो याद आ ग्या आज मन्नै, तेरी किरपा पा कैं किरसण।
टिक ग्या सूँ सन्देहरहित हो, ईब करूँगा कहणा तेरा॥ ७३

संजय उवाच

इत्यहं वासुदेवस्य, पार्थस्य च महात्मनः।
संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम्।। ७४

सञ्जै बोल्ल्या

(सञ्जै नै फेर बात समेट्टी)

न्यूँ मन्नै वसुदेवपुत्र का, ओर प्रिथा के पुत्र महात्मा।
अर्जन का यो संवाद सुण्या, इसा सुण्या नाँ कदे किसै नै।
रूँग खड़े यो करणै आळा॥ ७४

व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद् गुह्यमहं परम्।
योगं योगेश्वरात् कृष्णात्, साक्षात् कथयतः स्वयम्।।७५

व्यास महर्सी की किरपा तैं, सुण्या यो खूब गहरा मन्नै।
ग्यान ऊँचळा सब तैं बड्डा, निस्काम करम, ध्यान भक्ति के।।
दो रस्ते अर, च्यार तह्याँ का योग क्रिसण तैं, इन योग्गाँ कै।
स्वामी तैं स्याम्हीं कहँदे खुद।। ७५

राजन् संस्मृत्य संस्मृत्य, संवादमिममद्भुतम्।
केशवार्जुनयोः पुण्यं, हृष्यामि च मुहुर्मुहुः।। ७६

(संवाद याद कर खुसी भोत सै)

म्हाराज, याद कर-कर किरसण, अर्जन, की या बातचीत जो।
नोक्खी न्यारी दुनियाँ मैं सै, पुण्य पवित्तर निर्मळ करदी।

सुणनाळै नै सै, मैँ बी अर, खुस बी हो ह्वया फेर-फेर तैँ॥ ७६

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य, रूपमत्यद्भुतं हरेः।
विस्मयो मे महान् राजन्, हृष्यामि च पुनः पुनः।।७७

(विराट रूप सुमिर अचरज हो ह्वया)

वो अर कर-कर याद, अनोक्खा, बिस्मैकारी रूप क्रिसण का।
अचरज मन्नै भोत घणाँ सै, राज्जा जी, मैँ खुस हो ह्वया सूँ।
फेर-फेर सूँ, खुस राज्जा जी, फेर-फेर सूँ, अर फेर-फेर सूँ॥ ७७

यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्, ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।। ७८

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यासयोगो नामाष्टादशोऽध्यायः।।१८।।

(सञ्जै का निचोड़)

जित सै ग्यान करम ध्यान तथा, भक्ति मार्ग पै सही चलान्दा।
सब योग्गाँ का स्वामी किरसण, जित सै उन पै चाल्लणिया।
सुण कै उन नै धनुस उठान्दा, पिरथा का सुत धनुस पकड़ कैँ।
त्यार खड़्या मैदान अड़्या सै, उत सै 'स्री' सब जिस का आस्रै।
लेन्दे माणस सबी भाँत के, वा लिछमी सब की खुसहाल्ली।
ओर जीत सै या उत मिलदी, बैभव थिर बिस्तार सिरी का।
'नीती' रस्ता सही राह पै, चाल्लण राक्खण का उत सै।
यो सै निस्चै ओर मानणा, मेरा, राज्जा जी, सै यो ए॥ ७८

(मङ्गल-गायन)

कला सोळहाँ तैँ पूर्ण पुरुस, किरसण नै थी खुद समझाई।
वेद पुराणाँ अर सास्तराँ के, ग्यानी रिसि नै अर्जन ताईँ।। १
करमक्सेत्र मैँ धरमभूमि पै, म्हाभारत मैँ छन्द बन्ध मैँ।
याद करण मैँ हो आसानी, गूढ भोत बी सरल सबद मैँ।। २

एक्कै आत्मा व्यापत जग मैँ, जड़ मैँ, चेतन हाम् थम उस मैँ।
भेदभाव सैँ सारे झूट्ठे, हाजर नाजर मान सबै मैँ।। ३
एक्कै आत्मा परमेसर नै, लड़ो मरो नाँ तम्ह आप्पस मैँ।
खाणी-पीणी, रहणी-सहणी, राह बताई ग्यान करम मैँ।। ४
गीत्ता सै या सबद रूप मैँ, सारी ए दुनियाँ की माई।
इस नै बाँच्चो, पड्ढो, समझो, चाल्लो इस पै अर सब भाई।। ५
जीणा सब का सुखमै होगा, राग द्वेस से भाव मिटैँ गे।
करतब मारग सोण्हा अपणा, सब के सारे बन्ध कटैँ गे।। ६
म्हारी भूमी पै या गीत्ता, हरियाणी मैँ क्यूँ नाँ होवै?
हरियाणा का गौरव होवै, हरियाणी-भासा-मान बढै।। ७
वत्स-घोस यो फिर तैँ होवै, तन मन धन बुद्धी प्यार बढैँ।
गावाँ सारे मिल कैँ हम सब, जै हरियाणा जै हरियाणा।
भारत की होगी जै इस तैँ, जै भारत कह नाम बढाणा।। ८

स्रीमती सीत्तादेब्बी अर स्रीस्रीनिवास सास्तरी कै बेट्टै सिवनारायण सास्तरी कै हरियाणी भास्सा कै गीत्तायन काब्ब्य भास्स्य मैँ ठाह्रमाँ अद्ध्याय पूरा होया।। १८।।

पूर्वसलोकयोग ६२२ + ७८ = ७००